CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286
शोध-पत्र

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received 18.02.2023 Reviewed 26.02.2023 Accepted 18.03.2023

# निकोबारी जनजातीय शिक्षार्थियों के अंतःव्यैक्तिक संबंध के संदर्भ में चुनौतियाँ

*कु0 राखी
**डॉ विनीता सिंह गोपालकृष्णन

**मुख्य शब्द -** *अनभिज्ञ, अस्पृश्यता, संप्रेक्षण, असमर्थता, प्राथमिकता, अंतःव्यैक्तिक संबंध, केंद्रित अनुभव, प्रेक्षित आदि.*

## शोध सार

*जनजातियां वह मानव समुदाय है जो एक भिन्न एवं निश्चित भू–भाग में निवास करती है जिनकी एक विशेष संस्कृति,रीति–रिवाज एवं भाषा होती है। ये समुदाय अनेक प्रकार की भिन्नताओं के कारण अलग से पहचाने जाते है। इन समुदायों में निवास करने वाले सदस्य बाहरी दुनिया से लगभग अनभिज्ञ होते है, इसीलिए इन जनजातिय समुदायों को बाहरी लोगों के समुदायों की आम बोलचाल की भाषा को समझने में कठिनाई होती हैं। जिस कारण ये अन्य सामुदायिक लोगों से संपर्क नही कर पाते है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ये आज भी सामाजिक–सांस्कृतिक अलगाव, भूमि अलगाव एवं अस्पृश्यता की भावना महसूस करते हैं। वही भारत सरकार के प्रयत्न स्वरूप जनजातिय बालकों के लिये विशेष प्रावधान किये गये है। परंतु अन्य समुदाय से संप्रेक्षण की असमर्थता इनमें अंतः व्यैक्तिक संबंध की चुनौती बन सकती हैं, जिसके कारण शिक्षण कार्य में अनेक प्रकार की बाधाएं उत्पन्न हो सकती है। जनजातिय समूह स्कूली वातावरण में स्वयं को ढ़ाल पाने में असमर्थ रहते हैं जिससे ये समुदाय शिक्षा के क्षेत्र में पिछड जाते हैं। इन जनजातियों की सम्पूर्ण समस्या का मुख्य आधार उनका अशिक्षित, अनभिज्ञ एंव रूढिवादी होना ही होता है।*

*अशिक्षित होने के कारण इन समुदायों को अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, ये समस्या इनके मार्ग में अनेक प्रकार की बाधा उत्पन्न करती है। अतः इसके फलस्वरूप ये समुदाय वर्तमान में मिलने वाली प्राथमिकताओं से अनभिज्ञ रह जाते हैं। इस संबंध में अण्डमान निकोबार द्वीप के शिक्षार्थीयों के अंतःव्यैक्तिक संबंध का पुर्व अध्ययनों के आधार पर केंद्रित अनुभव, समस्याऐं तथा चुनौतियों को प्रेक्षित किया जा रहा है।*

**प्रस्तावना**

भारत में जनजातियाँ वह सामजिक समुदाय है जो विभिन्न राज्य के विकास से पहले आस्तित्व में थे। जनजाति वास्तव में भारत के आदिवासियो के लिए इस्तेमाल होने वाला एवं वैधानिक पद है। जनजाति केवल अपनें ही समुदाय में सहज महसूस करते है। इनका बाहरी समुदायों से सम्पर्क लगभग कम ही होता है, जिस कारण ये समुदाय उसी क्षेत्र के अन्य समुदाय से शिक्षा, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पिछड जाते हैं। जनजाति किसी भी ऐसे समुदाय को कहा जाता जिसमें आदिम लक्षण, विशिष्ट संस्कृति, भौगोलिक अलगाव, बडे पैमाने पर समुदाय के साथ सम्पर्क में संकोच होता हैं। इनमें मूल प्रजाति के लक्षण अधिक स्पष्ट होते हैं। ये अत्यन्त प्राचीन होते है। सामान्यतः जनजातियां किसी भी क्षेत्र के मूल निवासी होते हैं इसलिए भारत जैसे देश में इन्हें आदिवासी कहा जाता है।

भारतीय जनजातियों का मूल स्त्रोत कभी देश के सम्पूर्ण भू–भाग पर फैली प्रोटो आस्ट्रेलायड तथा मंगोल जैसी प्रजाति जनजातियों को माना जाता है तो इनका एक अन्य स्त्रोत नेग्रिटों प्रजाति भी है जिसके वंशज अण्डमान–निकोबार द्वीपसमूह में अभी भी मौजूद हैं। अण्डमान द्वीप भारत की भूमि से करीब १२०० किलोमीटर की दूरी पर बंगाल की खाड़ी के ह्रदय में स्थित अण्डमान एवं निकोबार कुल ५७२ द्वीपों की श्रृंखला है। यह क्षेत्र देखने में अत्यन्त मनोहर है, जो चारो तरफ से समुंद्र से घिरा हुआ है। अण्डमान में मुख्यतः दो प्रकार के लोग निवास करते हैं मूल निवासी एंव आदिम जनजाति। मूल निवासी उन लोगों के वंशज है जिन्हें १८५७ के सैनिक विद्रोह के बाद राजनीतिक बंदी के तौर पर मुख्य भूमि से लाया गया था। यहाँ रहने वाले ज्यादातर लोग दूर–दूर बस्तीयों में रहते है, जिस कारण इन्हें अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए मीलो पैदल चलना पडता है।

भारत के केन्द्र शासित राज्यों में अण्डमान निकोबार राज्य अत्यन्त रोचक है। यह राज्य लगभग २०० सालो तक ब्रिटिश राज में रहा है। ब्रिटिश सरकार विद्रोहियों एंव खतरनाक कैदियों को यहाँ की जेल में भेजती थी। भारतीयों के लिए यह स्थान कालापानी के नाम से प्रसिद्ध थी। अण्डमान निकोबार द्वीप में ५७२ द्वीप है जिनमें ३७ द्वीप पर ही जनसंख्या है, बाकी द्वीप खाली पडे है। इन द्वीपों पर रहने वाले आदिवासी हमेशा चर्चा का विषय रहते रहे है। इन आदिवासी समुदायों में जारवा एंव निकोबारी समुदाय अधिक चर्चित रहते है। ये आदिवासी समुदाय अब बाहरी लोगों के संपर्क में आने लगे है अतः भारतीय सरकार के संरक्षण में इन आदिवासीयों को शिक्षा दीक्षा प्रदान की जा रही है। इन आदिवासी समुदायों में निकोबारी आदिवासीयों को अधिक विकसित माना जाता है। क्योकि ये समुदाय आत्मनिर्भर होने के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे है। अण्डमान में निवास करने वाले आदिवासी शिक्षा की आवश्यकता एवं इसके लाभों के बारे में भली प्रकार से जानते हैं। इसिलिए ये समुदाय अपने बच्चों को राज्य द्वारा संचालित स्कूलों में भेजते हैं। शिक्षा के महत्व को समझने के बावजूद भी इन समुदायों के लिए शिक्षा विलासिता के रूप में देंखी जाती है जिसके लिए सभी लोग खर्च नहीं कर सकते हैं। इन समुदायों की आर्थिक स्थिति बेहतर नहीं होने एंव सीमित संसाधनों के कारण परिवार के सभी सदस्यों को शिक्षित नहीं किया जा सकता। हालांकि यहां भी शिक्षा प्राप्त करने का स्तर निम्न है परन्तु स्टेशनरी, वर्दी आदि खरीदने के सहायक खर्च अधिक है। इन रचनात्मक एवं प्रणालीगत कठिनाईयों के कारण इन द्वीपों में शिक्षा से सम्बन्धित अनेक चुनौतियां सामने आती हैं जिनमें जनजातीय शिक्षार्थियों का शिक्षक से संबंध सम्बन्धित अनेक चुनौतियों को देखा जा सकता है।

वैसे तो अण्ड़मान निकोबार में कई आदिवासी समुदाय निवास करते है परंतु इन समुदायों में निकोबारी आदिवासी भारत की एक प्रमुख जनजाति है।

**निकोबारी निवासी**

निकोबारी समाज में एक मुखिया होता है जिसे रानी की उपाधि प्राप्त रहती है। यह जनजाति अण्डमान निकोबार के निकोबार द्वीप पर समूह में रहते है। जिसमें यह समूह मुख्य रुप से निकोबार द्वीप में रहते है। निकोबार में निवास करने वाले स्त्री एंव पुरुषों का सामाजिक स्तर लगभग समान होता है।

**जनजाति आवास**

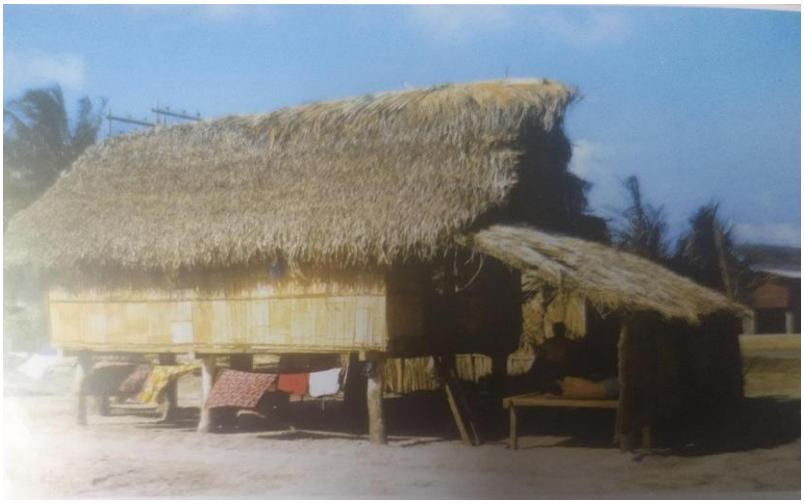

यहाँ निवास करने वालें लोगो का आवास स्थान खम्बों पर उठे हुए झोपडों पर होता है। ये जनजाति इन आवासों में सीढियों की मदद से चढते है। इन आवासों की एक बस्ती बनायी जाती है जिसमें ये निवासी निवास करते है। ये समुदाय अलग–अलग प्रकार

की निकोबारी भाषाएँ बोलते है। 'कार निकोबारी' भाषा यहाँ की मातृभाषा है। अतः विद्यालयों के अंतर्गत हिन्दी भाषा को मातृभाषा के रुप में मान्यता प्राप्त है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी भाषा को मुख्य स्थान प्राप्त है। निकोबारी समुदाय अब शिक्षा के क्षेत्र में बढ–चढकर हिस्सा लेने लगे है ये समूह अब आत्मनिर्भर है। स्कूली शिक्षा प्राप्त कर रहे शिक्षार्थियों को व्यवसायिक शिक्षा के प्रति सजग बनाया जा रहा है।

आदिवासी शिक्षा के सभी क्षेत्रों में अपना योगदान दे रहे है। शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति के उद्देश्य अनुसार सभी ६ से १४ वर्ष तक के छात्रों को निःशुल्क एंव अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जा रही है। अण्डमान में निवास करने वाले आदिवासी शिक्षा की आवश्यकता एवं इसके लाभों के बारे में भली प्रकार से जानते हैं। इन समुदायों की आर्थिक स्थिति बेहतर नहीं होने एंव सीमित संसाधनों के कारण परिवार के सभी सदस्यों को शिक्षित नहीं किया जा सकता। हालांकि यहां भी शिक्षा प्राप्त करने का स्तर निम्न है। इन रचनात्मक एवं प्रणालीगत कठिनाईयों के कारण इन द्वीपों में शिक्षा से सम्बन्धित अनेक चुनौतियां सामने आती हैं जिनमें जनजातीय शिक्षार्थियों का शिक्षक से संबंध सम्बन्धित अनेक चुनौतियों को देखा जा सकता है।

**अंतःव्यैक्तिक संबंध सम्बन्धी चुनौतियाँ**

निकोबारी समाज की प्रमुख समस्या आर्थिक पिछड़ापन है। आदिवासी क्षेत्र का प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है होने के बाद भी इन आदिवासियों समुदायों का जीवन भुखमरी और ऋण से ग्रस्त है। अण्डमान में निवास करने वाली जनजातियों की समस्या अशिक्षा है। इन जनजातियों के पास शिक्षा के संबंध में न तो उचित संसाधन उपलब्ध है और न ही आधुनिक तकनीकी। इन समुदायों का अशिक्षित एंव संसाधन रहित होना अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म देती है। निकोबार द्वीप में निवास करने वाले जनजातीय समूह आर्थिक रुप से काफी पिछड़े हुए है। पोर्ट ब्लेयर को छोड़कर यहां किसी भी अन्य क्षेत्र में उचित सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था के अभाव में शिक्षा से सम्बन्धित परिवर्तन कम ही देखने को मिलते हैं। यहां अधिकांश बस्ती तटवर्ती क्षेत्रों के रुप में है अतः ये क्षेत्र घने–वनों से घिरे हुए है जिस कारण स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों को पर्याप्त यातायात साधन उपलब्ध नही हो पाते है। जिस कारण इन विधार्थियों को अक्सर सात से आठ किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। ऐसी स्थिति में स्कूल जाना कठिनाईपूर्ण होता है। यहां के छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए या तो मुख्य भूमि पर आते या अण्ड़मान के पोर्ट ब्लेयर जिले में रहकर अपनी शिक्षा पूर्ण करते है। मूख्य भूमि पर रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के सम्मुख भाषा सम्बन्धि चुनौतिया आती रहती है। जिस कारण से ये छात्र और अधिक पिछड़ जाते है। अतः शिक्षक एवं छात्रों को ऐसी अनेक समस्याओं का सामना रोजाना करना पड़ता हैं। ये समस्याएं शिक्षक छात्र संबंधो में सबसे बड़ी बाधा है। शिक्षक छात्र सम्बन्धों में भाषा को भी समस्या के रुप में देखा जा सकता है इस क्षेत्र में तमिल, मलयालम, तेलगू, हिन्दी और बंगाली भाषा बोली जाती है जिस कारण यहां पढ़ाने वाले शिक्षक एवं छात्रों को संप्रेषण संबंधी अनेक समस्यों का सामना करना पड़ता हैं। इन छात्रों को पढाने वाले शिक्षक सभी भाषाओं में सहज नही होते है जिस कारण से छात्र शिक्षक संबंधों में कमी देखने को मिलती है। भाषा को किसी भी क्रिया कलाप के लिए सबसे आवश्यक एंव महत्वपूर्ण अवयव माना जाता है। जो किसी भी प्रकार की बातचीत को सकारात्मक बनाता है। यदि वार्तालाप या शिक्षण भिन्न भाषा में होगा जो शिक्षक एंव छात्रों की भाषा से भिन्न है तो वह शिक्षण कभी भी प्रभावी नही हो पायेगा। यहां रहने वाले छात्र भाषा विभिन्नता के कारण अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के होते हैं ये छात्र अपनी समस्याओं को शिक्षकों के सम्मुख प्रस्तुत नहीं कर पाते एवं स्कूली

वातावरण में स्वयं को असहज महसूस करते है इन सभी कारणों के चलते ये छात्र शिक्षकों के साथ अंतक्रिया सम्बन्धी समस्या अनुभव करते हैं। जिस कारण इन छात्रों के शिक्षकों के साथ मित्रतापूर्ण एवं सकारात्मक संबंध नहीं बन पाते हैं। विद्यालयी प्रशासन को शिक्षण कार्य में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं।

**सरकार द्वारा किये जा रहे कार्य**

आदिवासी छात्रों का विद्यालय में नामांकन बढाने के लिए सरकार के द्वारा प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है। प्रषासनिक विद्यालयों में नामांकन बढानें एंव षिक्षकों के साथ उनके संबंधों को सकारात्मक बनाने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किये जा रहें है। यहाँ सभी जनजातिय छात्रों को अनेक प्रोत्साहन प्रदान किये जा रहे है जो निम्न प्रकार है–

- निकोबारी छात्रों को सरकार के द्वारा फ्री पाठयपुस्तक, नोटबुक, लेखन सामग्री, वर्दी एंव स्कूल बैग मुहैया करवायें जाते है। जिससे इन छात्रों की पहुच स्कूलों तक हो सके और पढाई के लिए इन्हें उचित वातावरण मिल सकें। छात्रों के नामाकंन में वृद्धि के साथ ही साथ शिक्षा के क्षेत्र में इन समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।
- निकोबारी स्कूलों में छात्रों को मध्याहन भोजन योजना उपलब्ध कराया जाता है। जिससे नामाकंन के साथ–साथ इन समुदायों में आर्थिक स्थिति के बेहतर न होने के कारण होने वाले ड्रापआउट को कम किया जा सके और इन छात्रों का ध्यान सिर्फ पढाई में लगाया जा सके।
- जो छात्र यहाँ छात्रावास में रहते है उन छात्रों को प्रति माह ३०० रु की दर से छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इसके अलावा मुख्य भूमि पर रहकर शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को भी राज्य सरकार के द्वारा छात्रवृति प्रदान की जा रही है।
- अपने निवास से चार किलोमीटर दूरी पर स्थित विद्यालयों में पहुचने के लिए छात्रों को मुफ्त रियायत दी जाती है। जिससे कि ये छात्र समय पर स्कूल पहुच कर शिक्षा प्राप्त कर सके।
- मुख्य भूमि पर स्थित संस्थानों में पेशेवर एंव उच्च पाठयक्रमों में सीटों का आरक्षण एंव पोस्ट मैट्रिक छात्रवृति प्रदान की जा रही है। जिससे इन जनजातिय छात्रों को आगे बढनें के उचित अवसर प्राप्त हो सके

निकोबारी जनजातीयों को दी जाने वाली शिक्षा का संबंध व्यावहारिक जीवन से होता है। इन क्षेत्रों में शिक्षा को एकाएक अनिवार्य कर देने से इसके विरूद्ध प्रतिक्रिया हो सकती है। इस कारण धीरे–धीरे अनेक स्तरों पर शिक्षा का प्रसार किया जा रहा हैं। इन क्षेत्रों में प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने वाले अध्यापकों की नियुक्ति उसी क्षेत्र के शिक्षित आदिवासियों में से की जाती है। शिक्षणकाल में जनजातियों की सांस्कृतिक विशेषताओं की किसी प्रकार भी अवहेलना नहीं की जाती। जिससे इनकी आरम्भिक शिक्षा इन्हीं की संस्कृति के सन्दर्भ में विकसित की जाती है। शिक्षण संस्थाओं में मनोरंजन और जनजातीय संस्कृति से संबंधित कार्यक्रमों को विशेष महत्व दिया जाता है। जिससे आदिवासियों में इन संस्थाओं के प्रति रूचि बढ़ सके। शिक्षण के दौरान छात्रों को स्कूल में एक समय निःशुल्क जलपान की व्यवस्था कराई जाती है। अण्डमान निकोबार सरकार द्वारा स्कूलो में मध्यान्ह भोजना योजना लागू की गयी है। सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षकों के लिये पुरस्कार की व्यवस्था की गयी है। यह पुरस्कार उन शिक्षकों को दिया जाता है जिन शिक्षकों ने जनजातिय क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

**शैक्षिक सुधार हेतु किये जा रहे कार्य–**

इन आदिवासी द्वीपों में निवास करने वाले छात्रों के शैक्षिक प्रर्दशन में सुधार करने के लिए अनेक प्रकार की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके लिए सरकार एंव विद्यालय प्रशासन द्वारा अनेक कदम उठायें जा रहे है –

- शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के लिए मात्रभषा के साथ–साथ हिन्दी भाषा का प्रयोग शिक्षण में किया जा रहा जिससे ये छात्र मुख्य भूमि पर छात्रों के साथ संप्रेषण कर सके।
- कक्षा एंव विद्यालय में प्रथम स्थान एंव अच्छा प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित किया जाता है जिससे इन छात्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित किया जा सके।
- आवश्यकता वाले स्थानों में कोचिंग एंव उपचारात्मक कक्षाए उपलब्ध करायी जाती है जिससे शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का निराकरण किया जा सकें।
- नियमित कक्षाओं का आयोजन भी समय–समय पर होता रहता है । ये सभी प्रकियाए शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए व्यवस्थित करायी जा रही है।

**निष्कर्ष**

अण्ड़मान निकोबार द्वीप के निवासी मुख्यतः जीवन यापन करने के लिए कोई न कोई कार्य करने के लिए तत्पर रहते है। इन जनजातियों के लिए यहाँ निवास करना वैसे ही बडी चुनौती है, उपर से दो वक्त का भोजन जुटा पाना इनके लिए अत्यन्त कठिन समस्या हो जाती है। जिस कारण इनका कार्य करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। यहाँ कमाई का मुख्य साधन घूमने आने वाले बाहरी सैलानी है। इन जगहों पर केवल शिक्षा ही एक मात्र माध्यम जिसके द्वारा इन जनजातियों के जीवन स्तर को उपर उठा सकता है। यहां के छात्रों को मात्रभाषा के साथ हिन्दी भाषा का ज्ञान प्रदान किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी यहाँ सुधार देखे जा सकते है, स्कूलों विश्वविद्यालयों में अनेक प्रकार के कार्यक्रम चलायें जा रहे है जिससे इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सके एंव शिक्षा के आधार पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा सके, बाहर मुख्य भूमि पर शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को छात्रवृति प्रदान कि जा सके इन सभी सुधारों के पश्चात कुछ छात्र यहाँ से निकलकर मुख्य भूमि पर रहकर भी शिक्षा प्राप्त कर रहे है। शिक्षा के लिये इन्हें अनेक प्रकार से जागरूक किया जाये इसके लिए भी अनेक प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम चलायें जा रहे है जिससे कि ये समूह भोजन के अलावा जरूरी यानि की शिक्षा पर भी ध्यान केंद्रित कर सकगें एंव शिक्षक छात्र संबंधो को बेहतर बनाने में अपना योगदान दे सकेगें। इसके उपरान्त ही इन जनजातियों के जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है।

**सन्दर्भ**


- साउथ अण्डमान डिस्ट्रीक्ट.(२०२०).अण्डमान एंव निकोबार द्वीप समूह की सरकार. आई सी।
- साउथअण्डमान.एनआईसी.इन/निकोबार्स.अण्डमान.एनआईसी.इन /शिक्षा विभग
- निकोबार.(२०१६). अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह. विभाग. डिजिटल इण्डिया।
- डी.बी.सी. (२०१५). एल्यूकेशन ऑफ ट्राइबल पार्टीशिपेशन एण्ड इलेक्ट्रीवनेस रिगल पब्लिकेशन।

- कमल,एस.(२००४). एल्यूकेशन एण्ड सोसल इक्युटी विद स्पेशन फोकस आन सेड्यूल कस्टम एण्ड सेडयूल्ड हाईल्ड इन एलिमेन्ट्री एज्युकेशन" सेक्टर आफ इन्टरनेशनल केलकुलेशन फेकल्टी पब्लिकेशन।
- सत्यासाविति, वी.बी.(२०१८). इम्पेक्ट आफ आश्रम स्कूल इस्यू एण्ड चेलेसिस ऑफ ट्राइबल एज्युकेशन इन इण्डिया. इण्टरनेशनल जर्नल आफ साइन्टिफिक एण्ड रिसर्च पब्लिकेशन।
- उपाध्याय. पी, कुमार. ए.(१९८०). इम्पलीमेंटेशन आफद फन्डामेंटल राइट आफ द चाइल्ड टू एज्युकेशन केश आफ अण्डमान एण्ड निकोबार. आउटसेण्ड आधुनिक शिक्षा एवं दलितः रावत पब्लिकेशन्स।
- अहूजा, राम .(२०१०). सामाजिक समस्याएँः रावत पब्लिकेशन्स।
- बोरकर, जी. (२०१६), ट्राइबल आइडेन्टिटी इन एज्यूकेशन :डज टिचर एथ्निसिटी एफेक्ट स्टूडेन्ट परफॉरमेंस।
- पटेल, आर. और उपाध्याय, एस. (२०१०), द ट्राइबल कम्यूनिकेशन कॉन्टिनमः एन्थ्रोपोलोजिकल प्रोस्पेक्टिव ऑफ द कम्यूनिकेशन सिस्टम अमंग द जौनसारी', निकोबारी एण्ड जारावा, द एशियन मैन एन
- त्रिपाठी, पूनम. (२०१६), ट्राईब्स ऑफ अण्डमान एण्ड निकोबार आईसलैंड ए कम्पैरटिव् स्टडी ऑफ ग्रेट अण्डमानीज् एण्ड निकोबारी,सेल्सियन जर्नल ऑफ ह्यूमैनटिज़ एण्ड सोशल साइंस,२:१
- डायरेक्टर ऑफ एज्यूकेशन.(२००४), द ट्राइबल वुमेन, जेण्डर प्रोफाइल ऑफ अण्डमान निकोबार।
- कुमार, एम. (२०१५), आधुनिक शिक्ष एवं दलित, रावत पब्लिकेशन्स, हर्षित द्विवेदी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा शिक्षा में आरक्षण व्यवस्था. (१४)।



***Corresponding Author***

***कु0 राखी,** *रिसर्च स्कोलर,*

****ड़ॉ विनीता सिंह गोपालकृष्णन,** *एसोसिएट प्रोफेसर*

*शिक्षा संकाय,वनस्थली विद्यापीठ,राजस्थान*

*Email-rakhisingha333@gmail.com, Mobile-9650820194*